हिन्दुस्तान

पहाड़ के मरीजों के लिए वरदान बनी एम्स की टेलीमेडिसिन सेवा

सुविधा

ऋषिकेश,वरिष्ठ संवाददाता। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ऋषिकेश की टेलीमेडिसिन सेवा पहाड़ के लोगों के लिये लाभदायक साबित हो रही है। बड़ी संख्या में लोग टेली कंसल्टेंसी और ई संजीवनी से घर बैठे स्वास्थ्य सलाह ले रहे है। तीन वर्षों में अभी तक 50 हजार से अधिक लोग इस सेवा का लाभ उठा चुके हैं।

- अब सुदूर पहाड़ों में भी पहुंची एम्स की स्वास्थ्य सेवा
- टेली कंसल्टेंसी से घर बैठे मिल रही स्वास्थ्य सलाह

डॉक्टर ऑनलाइन माध्यम से नियमित स्तर पर रोगियों की समस्याएं सुनकर उन्हें आवश्यक स्वास्थ्य परामर्श दे रहे हैं। दूर-दराज के लोगों के लिए एक जीवन रक्षक प्रणाली भी है। इस सेवा से लोगों को अस्पताल तक की लंबी दूरी तय नहीं करनी पड़ती है और समय की बचत के साथ ही खर्चा भी कम होता है। -प्रो. मीनू सिंह, कार्यकारी निदेशक एम्स

50 हजार से अधिक मरीज तीन साल में घरों में बैठकर उठा चुके सेवा का लाभ

05 अगस्त 2023 को एम्स में डिपार्टमेंट ऑफ टेलीमेडिसिन विभाग की स्थापना की

ऐसे मिलेगा सेवा का लाभ

टेली कंसल्टेशन के लिए संस्थान की आधिकारिक वेबसाइट पर कुछ फोन नम्बर प्रदर्शित किए गए हैं। इन नम्बरों पर फोन कर स्वास्थ्य परामर्श लिया जा सकता है। इसके अलावा ई-संजीवनी पोर्टल का उपयोग कर वीडियो कॉल के माध्यम से भी विशेषज्ञों से परामर्श लेने की सुविधा संस्थान द्वारा संचालित की जा रही है। ट्रामा टेलीमेडिसिन टोल फ्री नंबर- 18001804278, इमरजेंसी टेलीमेडिसिन नंबर- 7060005829/ 0135-2462503, टेली मेडिसिन फालोअप नम्बर- 7302895044, आई बैंक नम्बर- 9068563883/0135- 2460835 पर फोन कर सकते है।

घर बैठे चिकित्सा परामर्श और स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से एम्स ने कोविड काल से पूर्व वर्ष 2018 में टेलिमेडिसिन सेवा की शुरूआत की। लेकिन 5 अगस्त 2023 को संस्थान में डिपार्टमेन्ट ऑफ टेलिमेडिसिन एण्ड बायोमेडिकल इन्फार्मेटिक की स्थापना होने के बाद इसके लिए एक अलग विभाग गठित कर दिया गया। इससे न केवल सैकड़ों किमी दूर घर बैठे व्यक्ति तक स्वास्थ्य परामर्श उपलब्ध करवाना आसान हुआ अपितु लाभ लेने वाले रोगियों की संख्या में भी लगातार इजाफा होने लगा। बतादें कि टेलिमेडिसिन सेवा के तहत संस्थान द्वारा टेलि-एजुकेशन और टेलि-परामर्श दो अलग-अलग स्वास्थ्य सुविधाएं संचालित की जा रही हैं। विषम भौगोलिक परिस्थितियों वाले उत्तराखंड राज्य में एम्स की यह स्वास्थ्य सेवाएं किसी वरदान से कम नहीं हैं। बीते 3 वर्षों के दौरान अभी तक 50 हजार से अधिक लोग इस सेवा का लाभ उठा चुके हैं।

इन विभागों से मिल रहा स्वास्थ्य परामर्श: एम्स ऋषिकेश की टेलीमेडिसिन सेवा द्वारा सर्जिकल गैस्ट्रोएंट्रोलाजी, बाल चिकित्सा सर्जरी, मूत्र विज्ञान, पल्मोनरी मेडिसिन, इण्डो, एंडोक्रिनोलाजी, प्रसूति एवं स्त्री रोग, बर्न और प्लास्टिक सर्जरी, त्वचा विज्ञान, न्यूरोसर्जरी, आर्थोपेडिक्स, जनरल मेडिसिन सहित कई अन्य महत्वपूर्ण विभागों के विशेषज्ञ चिकित्सक नियमित स्तर पर स्वास्थ्य परामर्श देते हैं।

हिन्दुस्तान

एम्स ऋषिकेश में उपलब्ध हैं वैक्सीनेशन की सुविधाएं, डायबिटीज और बुजुर्गों के लिए जरूरी है वयस्क वैक्सीन

बढ़ती उम्र में न भूले वयस्क टीकाकरण

स्वास्थ्य सलाह

ऋषिकेश,वरिष्ठ संवाददाता। यदि आप 50 की उम्र पार कर चुके हैं तो समय रहते कुछ जरूरी टीके लगाना न भूलें। बढ़ती उम्र में स्वास्थ्य देखभाल के चलते इन जीवन रक्षक टीकों का लगाया जाना बहुत जरूरी है। यह टीके न केवल गंभीर किस्म के संक्रामक रोगों से रक्षा करने में कारगर हैं अपितु ये शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में भी मदद करते हैं।

टीकाकरण की यह सुविधा एम्स ऋषिकेश में सप्ताह भर संचालित होती है। बीते पांच माह में आठ सौ से अधिक लोग लगा टीके लगा चुके है। डायबिटिक रोगी, बाह्य देशों की यात्रा करने वाले नागरिक और हज यात्रियों के लिये इन टीकों का लगाया जाना बहुत जरूरी है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने के कारण ढलती उम्र कई परेशानियां लेकर आती हैं। खासतौर से डायबिटिक रोगियो को इस उम्र में विभिन्न रोग अपनी चपेट में ले सकते हैं। ऐसे में जरूरी है कि 50 की उम्र पार करते ही प्रत्येक व्यक्ति को वयस्क टीकाकरण (एडल्ट वैक्सीनेशन) जरुरी है। हालांकि कई लोगों का मानना होता है कि वो बचपन में अधिकांश टीके लगा चुके हैं लेकिन चिकित्सकों का कहना है कि बचपन में लगाए गए टीकों का असर अधिकतम 35 साल की उम्र तक ही प्रभावी रहता है। उसके बाद शरीर में वैक्सीन निष्प्रभावी होने लगती है और रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होते ही बीमारियों का खतरा बढ़ने लगता है। 50 से अधिक उम्र के लोगों में निमोनिया, खांसी-जुकाम और संक्रमण से जुड़ी अन्य बीमारियों का खतरा ज्यादा होता है। इस उम्र के लोगों का स्वास्थ्य खराब होने पर प्रत्येक 10 में से 3 लोगों को अस्पताल में भर्ती करने की आवश्यकता होती है। ऐसे में इन्फ्लूएंजा, हेपेटाइटिस, टेटनस, निमोनिया, वैरीसेला आदि के टीके लगाना जरूरी हो जाता है।

प्रो. मीनू सिंह, कार्यकारी निदेशक एम्स ऋषिकेश।

50 वर्ष की आयु के बाद समय से लगवाएं वैक्सीन

- ढलती उम्र में संक्रमण से बचाने का काम करेंगे ये टीके

न्यूमोकोल और इन्फ्लूएंजा के टीके ज्यादा महत्वपूर्ण

ऋषिकेश। 50 की उम्र पार चुके लोगों में सबसे अधिक मामले सांस लेने में दिक्कत, छाती में निमोनिया होना, ज्यादा ठंड लगना और सांस फूलने जैसी बीमारियों के देखे जाते हैं। इसके लिए न्यूमोकोल वैक्सीन लगाने की सलाह दी गई है। इसके अलावा जिन लोगों में बचपन में चिकन पाक्स न हुआ हो उनको 'वैरीसेला' वैक्सीन लगाना बहुत जरूरी है। चिकन पाक्स का वायरस सांस की नली के माध्यम से शरीर में प्रवेश करता है और फिर शरीर की सभी नसों में फैल जाता है। इससे पूरे शरीर में लाल चकते उभर आते हैं। यह एक घातक बीमारी है।

वयस्कों के लिए टीकाकरण कार्यक्रम यह सुनिश्चित करता है कि उनमें प्रतिरक्षा प्रणाली बनी रहे और समय रहते बीमारियों का प्रकोप रोका जा सके। उम्र बढ़ने के साथ 50 पार करते ही प्रतिरक्षा प्रणाली आमतौर पर कमजोर हो जाती है और प्रतिरक्षा में यह कमी उन संक्रमणों और बीमारियों के जोखिम को बढ़ा सकती है जिन्हें रोका जा सकता है। यह टीके न केवल संक्रमण से बचाव करते हैं अपितु बीमारियों की गंभीरता को कम करने में भी सहायक हैं। -प्रो. मीनू सिंह, कार्यकारी निदेशक एम्स ऋषिकेश।

हड्डी रोग विशेषज्ञ न मिलने से मरीज लौटे

हरिद्वार। मेला अस्पताल में बुधवार को हड्डी रोग विशेषज्ञ उपलब्ध न होने के कारण करीब 80 मरीजों को बिना उपचार के ही वापस लौटना पड़ा। अस्पताल पहुंचे मरीजों को घंटों इंतजार करने के बाद निराश होकर लौटना पड़ा, जिससे मरीजों और उनके परिजनों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। जानकारी के अनुसार मेला अस्पताल में तैनात हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. मनोज द्विवेदी वर्तमान में चारधाम यात्रा ड्यूटी में तैनात हैं। वहीं दूसरे हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. शिवम पाठक को विभागीय एवं वीआईपी ड्यूटी के चलते अस्पताल से बाहर जाना पड़ा। इसके कारण वह ओपीडी में केवल कुछ समय के लिए ही मरीजों का उपचार कर सके। मेला अस्पताल के सीएमएस डॉ. राजेंद्र गुप्ता ने बताया कि डॉ. मनोज द्विवेदी चारधाम यात्रा में तैनात हैं, जबकि डॉ. शिवम पाठक को वीआईपी ड्यूटी पर जाना पड़ा। इसी वजह से हड्डी रोग विभाग की सेवाएं प्रभावित हुईं।